अध्याय 1

शोध: अर्थ, प्रकार और विशेषताएँ, प्रत्यक्षवाद एवं उत्तर-प्रत्यक्षवाद, तथा उपागम

डॉ अभिषेख कुमार पाण्डेय

भूमिका

मानव सभ्यता के विकास का मूल आधार ज्ञान रहा है, और ज्ञान की इस निरंतर यात्रा में शोध (Research) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। शोध वह सुव्यवस्थित, तर्कसंगत तथा वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य किसी समस्या, तथ्य, घटना या सिद्धांत के बारे में सत्य का अन्वेषण करता है। समाज, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था, मनोविज्ञान और प्रबंधन जैसे विविध क्षेत्रों में होने वाली प्रगति और नवाचारों का मूल स्रोत शोध ही है। वास्तव में, शोध मानव बुद्धि की वह जिज्ञासा है जो यथार्थ की समझ को विस्तृत करती है तथा नई संभावनाओं के द्वार खोलती है। समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शोध का महत्व और भी व्यापक हो गया है। बदलती सामाजिक संरचनाएँ, जटिल होती समस्याएँ, तेजी से विकसित होती तकनीक, तथा विभिन्न ज्ञान-विषयों का अंतः विषयक (Interdisciplinary) विस्तार शोध की नई दिशाएँ निर्धारित कर रहा है। आज शोध केवल अकादमिक दस्तावेज़ या

वैज्ञानिक प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है, बल्कि नीतिनिर्माण, नवाचार, उद्योग, सामाजिक सुधार और मानव विकास के लिए यह आधारभूत शक्ति बन चुका है। शोध का लक्ष्य केवल नए तथ्यों की खोज करना ही नहीं, बल्कि उपलब्ध ज्ञान की आलोचनात्मक समीक्षा, परीक्षण, सत्यापन और पुनर्परिभाषा करना भी है।

शोध के अर्थ, प्रकृति और उद्देश्य को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ज्ञान अत्यंत अनिवार्य है। शोध एक उद्देश्यपूर्ण, नियंत्रित, संगठित और व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें तार्किक चरणों के माध्यम से समस्या का अध्ययन किया जाता है और निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं। शोध की वैज्ञानिकता को स्वरूप देने में प्रत्यक्षवाद (Positivism) और उत्तर-प्रत्यक्षवाद (Post-Positivism) जैसी दार्शनिक धाराओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रत्यक्षवाद ज्ञान को अवलोकनीय, मापन योग्य और अनुभवजन्य (empirical) प्रमाणों पर आधारित मानता है, जबकि उत्तर-प्रत्यक्षवाद इस सीमा को विस्तृत करते हुए यह स्वीकार करता है कि सत्य बहुआयामी, संदर्भ-निर्भर और व्याख्यात्मक भी हो सकता है। साथ ही, यह भी मानता है कि शोधकर्ता स्वयं शोध-प्रक्रिया का हिस्सा होने के कारण कुछ स्तर तक शोध को प्रभावित करता है। इन दोनों दार्शनिक प्रवृत्तियों ने शोध की दिशा, रूपरेखा और विधियों को गहराई से प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द: शोध, अनुसंधान प्रक्रिया, वैज्ञानिक पद्धति, ज्ञान सृजन, समस्या-समाधान, गुणात्मक शोध, मात्रात्मक शोध, मिश्रित शोध, शोध डिजाइन, डेटा संग्रहण, डेटा विश्लेषण, शोध की विशेषताएँ, वस्तुनिष्ठता, सत्यापनयोग्यता, प्रत्यक्षवाद, उत्तर-प्रत्यक्षवाद, अनुभवजन्य शोध, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, शोध उपागम, अंतःविषयक शोध, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, सैद्धांतिक एवं अनुप्रयुक्त शोध।

शोध को सामान्यतः तीन प्रमुख वर्गों—गुणात्मक (Qualitative), मात्रात्मक (Quantitative) और मिश्रित (Mixed Methods)—में विभाजित किया जाता है। गुणात्मक शोध मानव व्यवहार, अनुभव, संस्कृति और सामाजिक संदर्भों की गहन समझ प्रदान करता है। इसके विपरीत, मात्रात्मक शोध संख्यात्मक डेटा, सांख्यिकीय विश्लेषण और वस्तुनिष्ठ व्याख्या पर आधारित होता है। मिश्रित शोध इन दोनों पद्धतियों का संतुलित उपयोग करता है, जिससे शोध के परिणाम अधिक समग्र, व्यापक और विश्वसनीय बनते हैं। इस प्रकार, शोध की संकल्पना, प्रकार, विशेषताएँ, दार्शनिक आधार और उपागम मिलकर एक विस्तृत एवं बहुआयामी ढाँचा निर्मित करते हैं, जो ज्ञान-विकास की निरंतर प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। प्रस्तुत अध्याय में इन सभी पहलुओं का क्रमबद्ध, गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा, ताकि

शोध की वैज्ञानिक, सामाजिक और दार्शनिक समझ का एक पूर्ण, स्पष्ट और सुसंगठित चित्र पाठकों के समक्ष उपस्थित किया जा सके।

मानव की बौद्धिक यात्रा का आरंभ प्रश्नों से होता है, और उन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने की प्रक्रिया आगे चलकर "शोध" का रूप लेती है। मनुष्य प्रारंभ से ही अपने परिवेश, प्रकृति, समाज और संस्कृति को समझने का प्रयास करता आया है। यही जिज्ञासा उसे नए ज्ञान की ओर ले गई और इसी के परिणामस्वरूप वैज्ञानिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा तकनीकी विकास संभव हुआ। आज शोध ज्ञान-सृजन का सर्वाधिक विश्वसनीय साधन माना जाता है, जो न केवल तथ्यों की खोज करता है बल्कि मौजूदा ज्ञान का पुनर्गठन, पुनर्व्याख्या और समीक्षा भी करता है। आधुनिक युग में शोध का दायरा विज्ञान और तकनीक से आगे बढ़कर शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रबंधन, संस्कृति, भाषाविज्ञान, स्वास्थ्य, पर्यावरण और राजनीति तक विस्तृत हो गया है।

शोध वह साधन है जो हमें न केवल समस्याओं को समझने में सहायता करता है, बल्कि उनके समाधान भी प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि वर्तमान अध्याय में हम शोध का अर्थ, स्वरूप, प्रकार, विशेषताएँ, दार्शनिक आधार—विशेषतः प्रत्यक्षवाद और उत्तर-प्रत्यक्षवाद—तथा प्रमुख शोध उपागमों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत

करेंगे, जिससे शोध की अवधारणा का वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन संभव हो सके।

शोध का अर्थ (Meaning of Research): शोध (Research) शब्द दो अंग्रेज़ी शब्दों—*Re* और *Search*—से मिलकर बना है। *Re* का अर्थ है "पुनः" या "बार–बार", और *Search* का अर्थ है "खोजना" या "अन्वेषण करना।" इस प्रकार, शोध का शाब्दिक अर्थ हुआ—"बार–बार खोज करना" या "किसी सत्य, तथ्य या ज्ञान की व्यवस्थित पुनः–जाँच करना।" यह परिभाषा इस बात पर बल देती है कि शोध केवल एक बार किया गया अध्ययन नहीं है, बल्कि यह ज्ञान की सतत, क्रमबद्ध और उद्देश्यपूर्ण खोज की प्रक्रिया है। शोध को सामान्यतः एक **वैज्ञानिक, तर्कसंगत, नियंत्रित, और व्यवस्थित अन्वेषण** के रूप में समझा जाता है, जिसका उद्देश्य किसी समस्या के समाधान हेतु तथ्यात्मक जानकारी एकत्रित करना, उसका विश्लेषण करना, और निष्कर्ष तक पहुँचना होता है। शोध विज्ञान, समाज, मानव व्यवहार, प्रकृति, तकनीक, शिक्षा तथा अन्य विषयों के ज्ञान का विस्तार करता है तथा उपलब्ध ज्ञान की सत्यता को जाँचने और नए दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करता है।

1. **शोध एक बौद्धिक अन्वेषण (Research as Intellectual Inquiry):** मनुष्य की बुद्धि निरंतर प्रश्न

उत्पन्न करती है—क्यों? कैसे? क्या? कब? और इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने की प्रवृत्ति शोध का मूल प्रेरक तत्व है। शोध मानव की जिज्ञासा (Curiosity), रचनात्मकता (Creativity) और समस्या-समाधान क्षमता (Problem-Solving Ability) का परिष्कृत रूप है। यह ज्ञान, अनुभव, अवलोकन और तर्क के आधार पर विश्व को समझने का प्रयास करता है।

2. **शोध एक वैज्ञानिक प्रक्रिया (Research as a Scientific Process):** वैज्ञानिकता शोध की मूल विशेषता है। वैज्ञानिक प्रक्रिया होने के कारण शोध—उद्देश्यपूर्ण (Purposeful), व्यवस्थित (Systematic), नियंत्रित (Controlled), तर्कसंगत (Logical), अनुभवजन्य (Empirical), सत्यापन योग्य (Verifiable), होता है। इसमें शोधकर्ता पूर्वनिर्धारित विधियों एवं प्रक्रियाओं का पालन करते हुए डेटा एकत्र करता है, उसका विश्लेषण करता है और युक्तिसंगत निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।
3. **शोध नया ज्ञान जोड़ने की प्रक्रिया (Research as Creation of New Knowledge):** शोध का एक प्रमुख उद्देश्य नए ज्ञान या अंतर्दृष्टि (Insight) का सृजन है। शोध न केवल पहले से उपलब्ध जानकारी का विस्तारित रूप

प्रस्तुत करता है, बल्कि यह नए विचार, सिद्धांत, अवधारणाएँ और मॉडल भी उत्पन्न करता है। शोध के माध्यम से नई खोजें Discoveries), नई व्याख्याएँ (Interpretations), नए सिद्धांत (Theories), नई विधियाँ (Methods), नई तकनीकें (Technologies) विकसित होती हैं, जो समाज और विज्ञान को आगे बढ़ाती हैं।

4. **शोध सत्य की खोज (Search for Truth):** शोध का मूल स्वभाव सत्य (Truth) की खोज है। शोधकर्ता उपलब्ध तथ्यों की जांच करता है, उनके स्रोतों को परखता है, और तार्किक विश्लेषण के आधार पर यह निर्धारित करता है कि कौन-सा तथ्य विश्वसनीय और प्रमाणिक है। सत्य की खोज के लिए शोधकर्ता— पूर्वाग्रहों से मुक्त रहने, वस्तुनिष्ठता बनाए रखने, प्रमाण-आधारित तर्क प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। प्रत्यक्षवाद और उत्तर-प्रत्यक्षवाद के विकास ने शोध में सत्य की अवधारणा को दार्शनिक रूप से समृद्ध किया है।

5. **शोध समस्या-समाधान की प्रक्रिया (Research as a Problem-Solving Activity)**: शोध का उद्देश्य अक्सर किसी समस्या, चुनौती या प्रश्न का समाधान ढूँढ़ना होता है। समस्या समाज, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, तकनीक या किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकती है। शोध व्यवस्थित तरीकों का उपयोग करके— समस्या की पहचान, डेटा संग्रह,

परिकल्पना निर्माण, विश्लेषण, निष्कर्ष एवं समाधान, प्रस्तुत करता है।

6. **शोध उपलब्ध ज्ञान का पुनर्मूल्यांकन (Re-evaluation of Existing Knowledge):** शोध केवल नया ज्ञान उत्पन्न नहीं करता, बल्कि मौजूदा ज्ञान की सत्यता का परीक्षण (Verification) भी करता है। समय के साथ वैज्ञानिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ बदलती हैं, इसलिए शोध पुराने सिद्धांतों और अवधारणाओं का पुनर्मूल्यांकन करता है, जिससे ज्ञान का ढाँचा समसामयिक और प्रासंगिक बना रहे।
7. **शोध एक सतत प्रक्रिया (Research as a Continuous Process):** शोध का कोई अंतिम बिंदु नहीं होता। ज्ञान का विस्तार अनवरत चलता रहता है। हर शोध नए प्रश्न उत्पन्न करता है और उन प्रश्नों का समाधान फिर नए शोध को जन्म देता है। इस चक्रीय प्रवाह में शोध समाज और मानव सभ्यता को निरंतर आगे बढ़ाता है। शोध एक **संगठित, वैज्ञानिक, तर्कसंगत, अनुभव-आधारित और उद्देश्यपूर्ण** प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव— सत्य का अन्वेषण करता है, समस्याओं को समझता और हल करता है, ज्ञान का विस्तार करता है, और समाज को आगे बढ़ाने वाले नवाचार उत्पन्न करता है। इसीलिए शोध को मानव विकास, सामाजिक

परिवर्तन, वैज्ञानिक उपलब्धि और नीतिगत निर्णयों की आधारशिला माना जाता है।

शोध की मुख्य अवधारणाएँ: अनुसंधान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है।

I. यह समस्या पर केन्द्रित होता है।
II. तथ्यों का संग्रह, विश्लेषण और व्याख्या शोध का आधार है।
III. परिकल्पना और सिद्धांतों का परीक्षण किया जाता है।
IV. शोध नया ज्ञान उत्पन्न करता है या मौजूदा ज्ञान को परिशोधित करता है।

विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ:

केरलिंगर (Kerlinger) की परिभाषा: "शोध व्यवस्थित, नियंत्रित, अनुभवसिद्ध और आलोचनात्मक अन्वेषण है जिसका उद्देश्य संभाव्य नियमों और सिद्धांतों की स्थापना करना है।" केरलिंगर शोध में वैज्ञानिकता पर विशेष बल देते हैं।

- **व्यवस्थित (Systematic):** शोध किसी अनियमित या यादृच्छिक क्रिया का नाम नहीं, बल्कि पूर्व-निश्चित चरणों और नियमों का पालन करने वाली प्रक्रिया है।

- **नियंत्रित (Controlled):** शोध में विभिन्न कारकों को नियंत्रित किया जाता है ताकि परिणामों को प्रभावित करने वाली बाहरी परिस्थितियों को न्यूनतम किया जा सके।
- **अनुभवसिद्ध (Empirical):** शोध अवलोकन और अनुभव से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित होता है, न कि कल्पना या अनुमान पर।
- **आलोचनात्मक (Critical):** शोधकर्ता तथ्यों का कठोर और तर्कपूर्ण मूल्यांकन करता है।

केरलिंगर की परिभाषा शोध को एक **वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ और अनुभव प्रमाणित प्रक्रिया** के रूप में स्थापित करती है, जो अंततः नियमों और सिद्धांतों तक पहुँचती है। इसका उद्देश्य केवल तथ्य एकत्र करना नहीं, बल्कि उनसे सर्वमान्य सिद्धांतों का निर्माण करना है।

क्रॉफर्ड (Crawford) की परिभाषा: "शोध वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समस्या का समाधान तार्किक एवं वैज्ञानिक विधि से किया जाता है।" क्रॉफर्ड शोध को मुख्यतः **समस्या-समाधान प्रक्रिया** मानते हैं। यह परिभाषा बताती है कि: शोध का प्रारंभ किसी समस्या या प्रश्न से होता है। शोधकर्ता तार्किक तर्क (Logic) और वैज्ञानिक विधि (Scientific Method) का प्रयोग करके समाधान खोजता है। शोध अनियोजित गतिविधि नहीं, बल्कि नियंत्रित एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया है। शोध का मूल्य उसकी **उपयोगिता** में है—यह

समस्या का समाधान प्रस्तुत करे। इस परिभाषा से यह स्थापित होता है कि शोध का मूल लक्ष्य **व्यावहारिक समस्याओं के सटीक और प्रमाणिक समाधान** देना है। यह शोध के अनुप्रयुक्त स्वरूप (Applied Nature) को भी स्पष्ट करता है।

बेस्ट एवं कान (Best & Kahn) की परिभाषा: "शोध एक उद्देश्यपूर्ण, व्यवस्थित और तार्किक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समस्याओं को पहचाना, समझा और हल किया जाता है।" Best और Kahn शोध को तीन प्रमुख चरणों में देखते हैं—

1. **समस्या की पहचान (Identification)**
2. **समस्या की व्याख्या या समझ (Understanding)**
3. **समाधान (Solution):**

उनके अनुसार:— शोध **उद्देश्यपूर्ण** है, अर्थात यह किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही किया जाता है। यह **व्यवस्थित** है, यानि क्रमबद्ध चरणों का पालन करता है। यह **तार्किक** है, जिसमें प्रत्येक कदम कारण–प्रमाण (Reason–Evidence) से जुड़ा होता है। यह परिभाषा शोध की प्रक्रिया के प्रवाह (Process Orientation) को स्पष्ट करती है तथा बताती है कि शोध केवल डेटा इकट्ठा करने का नाम नहीं, बल्कि समस्या को समझकर उससे संबंधित सार्थक निष्कर्ष देना है।

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट (John W. Best): "शोध ज्ञान की खोज का संगठित प्रयास है जो विश्व को समझने और नए तथ्यों को उजागर करने में सहायता करता है।" **व्याख्या (Detailed Explanation):** यह परिभाषा शोध के **ज्ञान-सृजन** (Knowledge Creation) की भूमिका पर प्रकाश डालती है।

- शोध विश्व को व्यवस्थित रूप से समझने की प्रक्रिया है।
- इसका उद्देश्य नए तथ्यों, सूचनाओं और विचारों का अनावरण है।
- "संगठित प्रयास" यह बताता है कि शोध किसी व्यक्तिगत या आकस्मिक क्रिया का नाम नहीं।
- यह मानव जिज्ञासा को वैज्ञानिक दिशा प्रदान करता है। यह परिभाषा शोध की बौद्धिक प्रकृति (Intellectual Nature) को दर्शाती है।

क्लिफर्ड वूडी (Clifford Woody): "शोध तथ्यों के संग्रह, उनके अभिलेखन और विश्लेषण की व्यवस्थित प्रक्रिया है जो किसी समस्या के समाधान की ओर ले जाती है।" Woody की परिभाषा शोध के **प्रत्यक्ष क्रियात्मक पहलुओं** पर बल देती है:

- आकड़ों का संग्रह (Data Collection)
- अभिलेखन (Recording)
- विश्लेषण (Analysis)

यह दर्शाती है कि शोध के प्रत्येक चरण को वैज्ञानिक ढंग से अभिलेखित और विश्लेषित किया जाना चाहिए। उनकी परिभाषा शोध के **डेटा-आधारित** (Data-Based) और **प्रक्रिया-आधारित** (Process-Oriented) स्वरूप को उजागर करती है।

लुंडबर्ग (Lundberg) "शोध एक वैज्ञानिक पद्धति है जिसका उद्देश्य वास्तविक दुनिया के तथ्यों का व्यवस्थित, नियंत्रित और आलोचनात्मक अध्ययन करना है।" Lundberg शोध को वैज्ञानिक पद्धति के रूप में परिभाषित करते हैं:

- यह वास्तविक तथ्यों का अध्ययन है।
- इसमें नियंत्रण आवश्यक है, ताकि परिणाम विश्वसनीय हों।
- यह आलोचनात्मक (Critical) है
- शोधकर्ता प्रमाणों को बिना प्रश्न किए स्वीकार नहीं करता।

यह परिभाषा बताती है कि शोध एक **तथ्य-आधारित, नियंत्रित और आलोचनात्मक प्रक्रिया** है।

सभी परिभाषाओं का सार (Unified Essence)

इन सभी परिभाषाओं का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि शोध—

- अनुभवसिद्ध (Empirical)
- वैज्ञानिक (Scientific)
- व्यवस्थित (Systematic)
- तार्किक (Logical)
- नियंत्रित (Controlled)
- आलोचनात्मक (Critical)
- समस्या-समाधान उन्मुख

प्रक्रिया है। शोध का मूल लक्ष्य सत्य की खोज, ज्ञान का विस्तार और व्यावहारिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है।

शोध के प्रकार (Types of Research): शोध बहुत व्यापक है, इसलिए इसे कई आधारों पर वर्गीकृत किया गया है। नीचे शोध के प्रमुख प्रकारों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है।

(A) उद्देश्य के आधार पर शोध

1. मूलभूत शोध (Basic/Fundamental Research)

- इसका उद्देश्य नए सिद्धांतों का विकास करना है।
- तात्कालिक उपयोगिता आवश्यक नहीं।

- ज्ञान-विस्तार इसका मूल लक्ष्य।
- उदाहरण:
  - बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत
  - मस्तिष्क के सीखने की जैविक प्रक्रियाओं पर शोध

2. अनुप्रयुक्त शोध (Applied Research):

- व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करता है।
- शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक सुधार, प्रशासन आदि में उपयोगी।
- उदाहरण:
  - कौन-सी शिक्षण विधि छात्र की उपलब्धि को अधिक बढ़ाती है?
  - ग्रामीण विकास कार्यक्रम कितने प्रभावी हैं?

3. कार्यवाही शोध (Action Research)

- तात्कालिक समस्या का त्वरित समाधान।
- शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रशासक स्वयं करते हैं।

- उदाहरण:
    - कक्षा में अनुशासन कैसे सुधरे?
    - धीमी सीखने वाले छात्रों के लिए कौन-सी विधि बेहतर?

(B) डेटा की प्रकृति के आधार पर शोध

1. मात्रात्मक शोध (Quantitative Research)

- संख्यात्मक डेटा और सांख्यिकी पर आधारित।
- उद्देश्यमूलक मापन।
- बड़े नमूने।
- निष्कर्ष सामान्यीकृत किए जा सकते हैं।
- उदाहरण:
    - छात्र उपलब्धि सर्वेक्षण
    - प्रयोगात्मक शोध

2. गुणात्मक शोध (Qualitative Research)

- अनुभव, व्यवहार, विचार, भावनाएँ, सामाजिक संदर्भ पर आधारित।
- छोटे नमूने।
- गहराई और अर्थ पर जोर।
    - उदाहरण: केस स्टडी, एथ्नोग्राफी, गहन साक्षात्कार

3. मिश्रित-विधि शोध (Mixed-Methods Research)

- दोनों विधियों का संयोजन।
- निष्कर्ष अधिक व्यापक और विश्वसनीय।
- सामाजिक विज्ञानों में अत्यधिक उपयोग।

विधि के आधार पर शोध

1. **ऐतिहासिक शोध (Historical Research):** अतीत की घटनाओं का अध्ययन।

- प्राथमिक सूत्र: दस्तावेज, अभिलेख, पत्र, अवशेष।
- उद्देश्य: अतीत को समझकर भविष्य का मार्गदर्शन।

2. वर्णनात्मक शोध (Descriptive Research): वर्तमान घटनाओं, स्थितियों, दृष्टिकोणों का अध्ययन। सर्वेक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार।

3. प्रायोगिक शोध (Experimental Research)

- चर का नियंत्रण।
- कारण–परिणाम संबंध स्थापित होता है।
- शिक्षा एवं मनोविज्ञान में अत्यधिक उपयोग।

4. सहसंबंधात्मक शोध (Correlation Research)

- चर के बीच संबंध का अध्ययन।
- यह कारण-परिणाम नहीं बताता।

5. कारण-तुलनात्मक शोध (Causal-Comparative Research)

- प्राकृतिक समूहों की तुलना।
- कारण का अनुमान लगाया जाता है।

3. शोध की विशेषताएँ (Characteristics of Research)

a. **वैज्ञानिकता:** शोध एक वैज्ञानिक पद्धति का पालन करता है।
b. **वस्तुनिष्ठता:** निष्कर्ष शोधकर्ता के व्यक्तिगत मतों से मुक्त होते हैं।
c. **व्यवस्थितता:** शोध में क्रमिक चरण होते हैं।
d. **नियंत्रित परिस्थितियाँ:** विशेषकर प्रायोगिक शोध में नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।
e. **मापन:** विश्वसनीय उपकरणों द्वारा डेटा का संग्रह।
f. **सत्यापनयोग्यता:** अन्य शोधकर्ता परिणामों की जाँच कर सकें।
g. **पुनरुत्पाद्यता:** शोध दोहराया जाए तो समान या साम्य परिणाम मिले।
h. **आलोचनात्मकता:** शोध में तार्किक और समालोचनात्मक दृष्टिकोण।
i. **नवीनता:** शोध मौलिक होना चाहिए।
j. **नैतिकता:** मानवीय मूल्यों का संरक्षण।

4. प्रत्यक्षवाद (Positivism): प्रत्यक्षवाद सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिकता लाने वाला दर्शन है। इसका प्रतिपादन **ऑगस्त कॉम्ट (Auguste Comte)** ने किया।

A. प्रत्यक्षवाद की मूल मान्यताएँ

1. विश्व वस्तुनिष्ठ है; इसे मापा जा सकता है।
2. ज्ञान केवल अवलोकन और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।
3. वैज्ञानिक विधि सर्वोपरि है।
4. सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह हो सकता है।
5. कारण–परिणाम संबंध निश्चित हैं।

प्रत्यक्षवाद की विशेषताएँ:

- अनुभववाद (Empiricism)
- प्राकृतिक विज्ञानों की विधि का उपयोग
- सांख्यिकी और मापन पर जोर
- वस्तुनिष्ठता
- सामान्यीकरण

शोध में उपयोग

- सर्वेक्षण
- प्रयोग
- मापन उपकरण
- सांख्यिकीय उपचार

प्रत्यक्षवाद के कारण शोध में कठोरता, विश्वसनीयता और वैज्ञानिकता बनी।

5. उत्तर-प्रत्यक्षवाद (Post-Positivism): प्रत्यक्षवाद की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं कि सामाजिक घटनाओं को पूरी तरह मापा नहीं जा सकता, इसलिए उत्तर-प्रत्यक्षवाद का उदय हुआ।

A. उत्तर-प्रत्यक्षवाद की मान्यताएँ

- पूर्ण सत्य नहीं, केवल संभावित सत्य जाना जा सकता है।
- शोधकर्ता मूल्य-निरपेक्ष नहीं रह सकता।
- वास्तविकता बहुआयामी है।
- शोध में संदर्भ, संस्कृति और अनुभव का महत्व।
- त्रिकोणिकरण आवश्यक।

B. उत्तर-प्रत्यक्षवाद की विशेषताएँ

- आलोचनात्मक यथार्थवाद
- गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियाँ
- सामाजिक व्याख्याएँ महत्वपूर्ण
- नैतिकता और संवेदनशीलता

C. शोध में उपयोग

- मिश्र विधि
- केस स्टडी
- एथ्नोग्राफी
- साक्षात्कार + सांख्यिकी
- व्याख्यात्मक विश्लेषण

6. शोध के उपागम (Approaches to Research)

I. मात्रात्मक उपागम

- संख्याओं पर आधारित।
- परिकल्पना परीक्षण।

- सांख्यिकी।
- सामान्यीकरण।

II. गुणात्मक उपागम

- मानव व्यवहार और अनुभव।
- साक्षात्कार, अवलोकन।
- विस्तृत वर्णन।
- अर्थ निकालना और व्याख्य।

III. मिश्रित उपागम

- दोनों का संयोजन।
- त्रिकोणिकरण।
- विश्वसनीय और व्यापक निष्कर्ष।

IV. आलोचनात्मक उपागम

- शक्ति संरचना
- सामाजिक परिवर्तन हेतु शोध
- लैंगिकता, जाति, वर्ग

V. तुलनात्मक उपागम

- विभिन्न समूहों/राष्ट्रों/संस्थाओं की तुलना।

VI. प्रायोगिक उपागम

- कारण–परिणाम संबंध
- नियंत्रित वातावरण
- स्वतंत्र व आश्रित चर

निष्कर्ष

शोध मानव सभ्यता के विकास का मूल आधार है। यह ज्ञान को व्यवस्थित, तार्किक और उद्देश्यपूर्ण ढंग से विकसित करता है। शोध के प्रकार, इसकी विशेषताएँ और दार्शनिक आधार हमें यह समझने में मदद करते हैं कि सामाजिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाए। प्रत्यक्षवाद ने शोध की वैज्ञानिकता पर बल दिया, जबकि उत्तर-प्रत्यक्षवाद ने सामाजिक जटिलताओं और

व्याख्यात्मकता को स्वीकार किया। विभिन्न शोध उपागम शोधकर्ता को उपयुक्त विधि चुनने में सहायता करते हैं। इस प्रकार, शोध एक निरंतर चलने वाली, गहराई से जुड़ी, वैज्ञानिक और मानवीय प्रक्रिया है जो समाज, ज्ञान और विकास को आगे बढ़ाती है।

सन्दर्भ:

- बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं कान, जे. वी. (2006). *शिक्षा में अनुसंधान* (10वाँ संस्करण). नई दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
- केरलिंगर, एफ. एन. (1986). *व्यवहारिक अनुसंधान की आधारशिला* (3रा संस्करण). न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन।
- कोठारी, सी. आर. (2004). *अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें* (2रा संस्करण). नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. (2014). *अनुसंधान रूपरेखा: गुणात्मक, मात्रात्मक एवं मिश्रित उपागम* (4था संस्करण). थाउजेंड ओक्स: सेज पब्लिकेशन्स।
- कोहेन, एल., मैनियन, एल. एवं मॉरिसन, के. (2007). *शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ* (6ठा संस्करण). लंदन: रूटलेज।
- लुंडबर्ग, जी. ए. (1942). *सामाजिक अनुसंधान: डेटा संकलन की विधियाँ*. न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी।
- वूडी, सी. (1927). *शैक्षिक अनुसंधान का परिचय*. न्यूयॉर्क: एपलटन-सेंचुरी-क्रॉफ्ट्स।
- कॉम्ट, ऑगस्त (1853). *पॉजिटिव दर्शन (Positive Philosophy)*. लंदन: चैपमैन।
- पॉप्पर, कार्ल (1959). *वैज्ञानिक खोज का तर्क*. लंदन: हचिन्सन।
- ब्रायमैन, ए. (2012). *सामाजिक अनुसंधान विधियाँ* (4था संस्करण). ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- बैबी, ई. (2010). *सामाजिक अनुसंधान का व्यवहार* (12वाँ संस्करण). बेलमोंट: वाड्सवर्थ।
- न्यूमैन, डब्ल्यू. एल. (2013). *सामाजिक अनुसंधान विधियाँ: गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टिकोण* (7वाँ संस्करण). बोस्टन: पियरसन।
- फ्लिक, यू. (2018). *गुणात्मक अनुसंधान का परिचय* (6ठा संस्करण). लंदन: सेज पब्लिकेशन्स।

- डेनज़िन, एन. के. एवं लिंकन, वाई. एस. (2011). *गुणात्मक अनुसंधान की सेज हैंडबुक* (4था संस्करण). थाउजेंड ओक्स: सेज।
- ताशक्कोरी, ए. एवं टेडली, सी. (2010). *मिश्रित अनुसंधान पद्धति*. थाउजेंड ओक्स: सेज पब्लिकेशन्स।